ISSN:2583-8849

सुन्दरदास

1-

प्रात ही उठत सब पेट ही की चिंता सब,
सब कोऊ जात आपु आपुने अहार कौं।
कोउ अन्न खात पुनि आमिष भखत कोउ,
कोउ घास चरत, चरत कोउ दार कौं॥
कोऊ मोतीफल कोऊ बास रस पय पान,
कोऊ पौंन पीवत भरत पेट भार कौं।
सुंदर कहत प्रभु पेट ही भ्रमाये सब,
पेट तुम दियौ है जगत हौन ख्वार कौं॥

2-

पेट सौ न बली जाकै आगे सब हारि चले,
राव अरु रंक एक पेट जीति लिये हैं।
कोउ बाघ मारत विदारत है कुंजर कौं,
ऐसै सूरबीर पेट काज प्रान दिये हैं॥
यंत्र मंत्र साधत अराधत मसान जाइ,
पेट आगे डरत निडर ऐसै हीये हैं।
देवता असुर भूत प्रेत तीनौं लोक पुनि,
सुंदर कहत प्रभु पेट जेर किये हैं॥

3-

झूठौ जग एन सुन नित्य गुरु बैन देखे,
आपने हू नैंन तोऊ अंध रहै ज्वानी मैं।
केते राव राजा रंक भये रहे चलि गये,
मिलि गये धूर मांही आये ते कहानी मैं।
सुंदर कहत अब ताहि न सुरत आवै,
चेतै क्यौं न मूढ़ चित्त लाय हिरदानी मैं।
भूले जन दाव जात लोह कौ सौ ताव जात,
आव जात ऐसे जैसें नाव जात पानी मैं॥

4-

भई हौं अति बावरी बिरह घेरी बावरी,
चलता ऊंचौ बावरी परौंगी जाइ बावरी।
फिरत हौं उतावरी लगत नहीं तावरी,
सुवाही कौं बतावरी चल्यौ है जात ताव री।
थके हैं दोउ पांवरी चढत नहिं पावरी,
पियार नहिं पावरी ज़हर बांटि पाव री॥
दौरत नहिं नावरी पुकारि कै सुनाव री,
सुंदर कोउ नावरी डूबत राखै नावरी॥

5-

कामिनी कौ अंग अति मलिन महा अशुद्ध,
रोम-रोम मलिन, मलिन सब द्वार हैं।
हाड-मांस-मज्जा-मेद-चाम सौं लपेट राखै,
ठौर-ठौर रकत के भरेई भंडार हैं।
मूत्र ऊ पुरीष आंत एकमेक मिलि रही,
और ऊ उदर मांहि बिबिध विकार हैं।
सुंदर कहत नारी, नख शिख निंद रूप,
ताहि जे सराहैं ते तौ बडेई गंवार हैं॥

6-

बैरी घर मांहि तेरे जानत सनेही मेरे,
दारा सुत बित्त तेरौ खोसि-खोसि खाहिंगे।
और ऊ कुटंब लोग लूटें चहुं वोरही तें,
मीठी-मीठी बात कहि तोसौं लपटाहिंगे॥
संकट परैगौ जब कोऊ नहिं तेरौ तब,
अतिहि कठिन बांकी बेर बुटि जाहिंगे।
सुंदर कहत तातैं झूठौ ही प्रपंच यह,
सुपने की नाहिं सब देखत बिलाहिंगे॥